इन्टरव्यू २२

प्र: आपका नाम क्या है ?
ज: मेरा नाम इमरान खान है।

प्र: आपकी उम्र कितनी होगी ?
ज: मेरी उम्र 30 साल है।

प्र: आप कितने साल से इस काम में लगे हैं ?
ज: करीब पन्द्रह साल से।

प्र: ये करघा आपका अपना है ?
ज: नहीं मजदूरी करते हैं।

प्र: कितनी मजदूरी मिलती है ?

ज: 400 रुपये मिलती है।

प्र: चार सौ हर महीने ?
ज: नहीं एक साड़ी का।

प्र: और कितनी साड़ियां आप बुन लेते हैं एक महीने में ?
ज: एक महीने में समझिये आठ नौ साड़ी होती है।

प्र: आठ नौ साड़ी हो जाती है एक महीने में ?
ज: हां जी।

प्र: आपका एक महीने का कितना हो जाता है ?
ज: 4000 के आसपास हो जाता है।

प्र: आराम से हो जाता है या घटता-बढ़ता रहता है ?
ज: नहीं घटता बढ़ता रहता भी है, काम के ऊपर है।

प्र: तो घट कर कभी ऐसा भी हुआ है कि बहुत कम हो गया हो ?
ज: हां ऐसा भी होता है, कभी किसी महीने में 3000 भी हो जाता है कभी 4000 भी हो जाता है, इसी तरह।

प्र: आपका पूरा घर चलाने का जरिया यही है ?
ज: हां बस यही है।

प्र: कितने और लोग हैं घर में ?
ज: घर में छः लोग हैं।

प्र: जो आपके ही खर्चे पर हैं ?
ज: जी हां।

प्र: पूरा पड़ जाता है ?
ज: किसी तरह चलाना ही पड़ता है।

प्र: पहले आपके अब्बा भी यही काम करते थे ?
ज: नहीं वो मुन्शी का काम करते थे।

प्र: आप कैसे इस लाइन में आ गये ?
ज: हम इस लाइन में.... बचपने से रह गये थे गोरखपुर में, उसी वजह से सीख गये।

प्र: गोरखपुर में भी ये काम होता है ?
ज: हां।

प्र: आपके घर में और लोग भी इस लाइन में आये थे ?
ज: नहीं मैं अकेला आया।

प्र: आश्चर्य हो रहा है कि आप कैसे आ गये इस काम में, आप सीखे होंगे बचपन में ?
ज: हां बचपन में ही।

प्र: वहीं गोरखपुर में ही सीखे ?
ज: हां गोरखपुर में ही।

प्र: फिर यहां बनारस कैसे आये ?
ज: एक दोस्त कारीगर के जरिये से आये।

प्र: तब से 15 साल से आप बुनकारी ही कर रहे हैं ?
ज: हां।

प्र: अच्छा आप 15 साल से यहां हैं, तो आपको बहुत अनुभव भी होगा आपको, क्या आपको लगता है कि हम 15 सालों में बुनकारी की स्थिति में बदलाव आया है, अच्छी हुई है, या खराब हुई है ?
ज: न और खराब हो गया है, पहले से और खराब हो गयी है।

प्र: जैसे किस मायने में ?
ज: पहले काम मिलता था, अब ऐसा हो गया कि माने मजदूरी बढ़ती नहीं घटती नहीं हैं, पैसा मिलता नहीं है काम आदमी का बढ़ता है, कभी काम बन्द भी हो जाता है।

प्र: और रेशम का दाम भी घटता बढ़ता रहता है ?
ज: हां, घटता बढ़ता हैं।

प्र: और एक्सपोर्ट वगैरह में बदलाव का आपको अन्दाजा होगा ?
ज: नहीं, इसका हमको अन्दाजा नहीं।

प्र: तो क्या कारण लगता है आपको कि क्यों ऐसा हुआ, क्यों स्थिति खराब होती जा रही है ?
ज: कारण क्या माने जैसे बाजार चल रहा है वैसे चलता है, मार्केटिंग के ऊपर है।

प्र: तो अभी बाजार डाउन चल रहा है या....?
ज: डाउन चल रहा है शायद दशहरा, दुर्गा पुजा में बाजार कुछ चलेगा।

प्र: इस समय आपको एक महीने में कितनी साड़ी मिल जायेगी ?
ज: इस समय एक महीने में सात साड़ी लगभग।

प्र: और उस समय में ?

ज: उस समय में नौ साड़ी होती है।

प्र: तो आपको मजदूरी तुरन्त मिल जाती है या ?
ज: जी तुरन्त की तुरन्त।

प्र: कभी साड़ी में कोई खोट आ जाए तो उसका पैसा कटता है ?
ज: हां कटता है।

प्र: कितना कटता है ?
ज: जितना अगली पार्टी काटती है, वही हिसाब से काटती है।

प्र: हर गिरहस्ता की मजदूरी अलग-अलग होती है या एक ही होती है ?
ज: अलग अलग होती है सबकी, जैसा काम रहता है, वैसी मजदूरी रहती है।

प्र: नहीं, काम के हिसाब से मजदूरी फिक्स है यहा हर गिरहस्ता अलग अलग तरह से देता है ?
ज: काम के हिसाब से मजदूरी फिक्स है। जैसी साड़ी रहेगी उसी हिसाब से मिलती है।

प्र: जैसे आप कोई भारी साड़ी बुनेंगे तो उस तरह से ?
ज: हां तो उसकी मजदूरी जादे होगी हल्की साड़ी की कम।

प्र: जैसे अगर केवल बार्डर पर काम है उसकी मजदूरी कितनी होती है ?
ज: उसकी मजदूरी वही 12-13 सौ रुपये, काम के हिसाब से।

प्र: अच्छा बुनकरों की स्थिति जो इतनी खराब हो रही है, तो इसे लेकर कोइ समिति वगैरह नहीं है ?
ज: उसकी कोई जानकारी नहीं हैं, हम तो यहां परदेस में हैं, काम से केवल मतलब रखते हैं।

प्र: आपका घर अभी भी वहीं हैं गोरखपुर ?
ज: हां।

प्र: आप जाते होंगे कभी कभी ?
ज: हां साल छः महीने में जाता हूं।